1 अक्टूबर 2011

पांचवां दिन

मां स्कंदमाता

ॐ स्कंदमाता देव्यैः नमः।

नवरात्र के पुण्य पर्व पर पांचवें दिन मां स्कंद माता की पूजा, अर्चना एवं साधना का विधान वर्णित है। मां के पांचवें स्वरूप को स्कंद माता के नाम से जाना जाता है। पांचवें दिन की पूजा साधना में साधक अपने मन-मस्तिष्क को विशुद्ध चक्र में स्थित करते हैं। स्कंद माता स्वरूपिणी भगवती की चार भुजाएं हैं। सिंहारूढ़ा मां पूर्णतः शुभ हैं। साधक मां की आराधना में निरत रहकर निर्मल चैतन्य रूप की ओर अग्रसर होता है। उसका मन भौतिक काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद (अहंकार) से मुक्ति प्राप्त करता है तथा पद्मासना मां के श्री चरण कमलों में समाहित हो जाता है। मां की उपासना से मन की सारी कुण्ठा जीवन-कलह और द्वेष भाव समाप्त हो जाता है। मृत्यु लोक में ही स्वर्ग की भांति परम शांति एवं सुख का अनुभव प्राप्त होता है। साधना के पूर्ण होने पर मोक्ष का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है। मां की उपासना के साथ ही भगवान स्कंद की उपासना स्वयं ही पूर्ण हो जाती है। क्योंकि भगवान बालस्वरूप में सदा ही अपनी मां की गोद में विराजमान रहते हैं। भवसागर के दुःखों से छुटकारा पाने के लिए इससे दूसरा सुलभ साधन कोई नहीं है।

साधना विधि

सर्वप्रथम मां स्कंद माता की मूर्ति अथवा तस्वीर को लकड़ी की चौकी पर पीले वस्त्र को बिछाकर उस पर कुंकुम से ॐ लिखकर स्थापित करें। मनोकामना की पूर्णता के लिए चौकी पर मनोकामना गुटिका रखें। हाथ में पीले पुष्प लेकर मां स्कंद माता के दिव्य ज्योति स्वरूप का ध्यान करें। ध्यान के बाद हाथ के पुष्प चौकी पर छोड़ दें। तदुपरांत यंत्र तथा मनोकामना गुटिका सहित मां का पंचोपचार विधि द्वारा पूजन करें। पीले नैवेद्य का भोग लगाएं तथा पीले फल चढ़ाएं। इसके बाद मां के श्री चरणों में प्रार्थना कर आरती पुष्पांजली समर्पित करें तथा भजन कीर्तन करें।

मां कूष्माण्डा का भोग बदलेगा आपका भाग्य

आज के दिन नित्यक्रम से निवृत हो स्नानोपरांत मां भवगती को श्रद्धापूर्वक पूजन करके भगवती को केले का भोग लगाये और वह प्रसाद ब्राह्मण को दें, ऐसा करने से पुरुष की बुद्धि का विकास होता है।

बृहस्पति ग्रह पीड़ा निवारण

जिस जातक की जन्म कुंडली में निजकर्त कर्मों की वजह से बृहस्पति कमजोर हो या बृहस्पति की वजह से आपके जीवन में कोई परेशानी आ रही हो तो माँ भगवती स्कन्द माता का ॐ ऐं क्लीं ह्लीं स्कन्धमाते हुं हुं फट् स्वाहा। मंत्र का जाप करना बहुत ही शुभ रहेगा।

व्यावसायिक बाधा निवारण के उपाय

यदि आपको आपके व्यापारिक कार्यों में अनावश्यक बाधाएं आ रहीं हैं तो आज के दिन यह उपाय शुरु करें। घी का दीपक जला दें। एक माला ॐ ऐं ह्लीं क्लीं चामूण्डाय विच्चे ॐ स्कन्द माता देव्यै नमः, एक पाठ श्री गणेश स्तोत्र प्रतिदिन सुबह नियमित रूप से करें। पूजा करने के उपरांत हर रोज गाय को हरी घास खिलाएं। हरा चारा डालें। ऐसा 43 दिन, 86 दिन या 172 दिन करें।

बाधा निवारण और बाधा विनाशक प्रयोग

यदि किसी के भी साथ अनावश्यक, बार-बार कोई भी कारण नहीं और परेशानी आ रही हो, मन बेचेन रहता हो, अनहोनी दुर्घटनाएं घट रही हों और एक्सीडेंट होता हो तो 800 ग्राम चावल दूध से धो कर पवित्र पात्र में अपने सामने रख लें। और एक माला ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामूण्डाय विच्चे ॐ स्कन्द माता देव्यै नमः और एक माला मंगलकारी शनि मंत्र का जाप करें। तत्पश्चात इस सामग्री को अपने ऊपर से 11 बार उसार करके किसी तालाब अथवा बहते पानी में प्रवाह करें। और दूध किसी कुत्ते को पीला दें। यह उपाय लगातार 43 दिन तक करें। इस समस्या से छुटकारा मिल जाएगा।

शारीरिक बाधा-निवारण प्रयोग

यदि आपके परिवार में किसी का भी स्वास्थ्य बार-बार खराब होता हो और अधिक दिन तक खराब रहता हो तो आज का दिन इस बाधा को हटाने के लिए रामबाण है। 7 नारियल, प्रत्येक नारियल पर 7 बार कलावा लपेट लें। सात बादाम, सात साबुत सुपारी, आठ मुटठी काली उड़द नीले कपड़े में बांध कर अपने सामने थाली में रख दें। एक माला ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामूण्डाय विच्चे ॐ स्कन्द माता देव्यै नमः की जाप करें। तत्पश्चात यह समस्त सामग्री अपने ऊपर से सात बार उसार कर किसी भी भगवती के मंदिर में चुपचाप रख कर आ जाएं। ऐसा 43 दिन तक नियमित करें। समय दोपहर का हो तो और अच्छा रहेगा।

कल मां कात्यायनी दिलायेगी पारिवारिक समस्याओं से छुटकारा, ग्रह कलह से मिलेगा निजात